P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'रेखा' में नारी से जुड़ा मिथक और यथार्थ

रमेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जननायक चौ0 देवीलाल
कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
सिरसा, हरियाणा

ममता
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
चेन्नई, तमिलनाडु

सारांश

मानव जीवन के सूक्ष्म एवं जटिल यथार्थ, साहित्यकार को शक्ति प्रदान करता है तथा उसे जीवन के प्रति अनुरक्त करता है। इसी यथार्थ की प्रखर अभिव्यक्ति है, साहित्य। बहुत सारी प्रतिकूलताओं के बीच फंसा मानव, जीने के संघर्ष में लगा हुआ। उपन्यास रेखा के जीवन की समस्त विसंगतियों के बीचोबीच खड़े मनुष्य के यथार्थों को अपनी विविध विधाओं में समेटकर उद्घोषित करने में साहित्य ने सफलता हासिल की है। काल–प्रवाह के साथ–साथ साहित्य संबंधी अभिरुचि में भी बदलाव आया है। परिणामतः साहित्य के नये रूप तथा शैलियों का उदय हुआ। इसी विकसित साहित्य रूप का एक सशक्त विधा है, उपन्यास। कोई भी साहित्यिक कृति सामाजिक जीवन से अलग होकर सार्थक नहीं बन सकती। साहित्यकार की निजी विचारधारा सामाजिक परिवेश से प्रेरित एवं प्रभावित रहती है। आधुनिक जीवन के जटिलतर यथार्थ की अंदरुनी हकीकतों को उसकी पूरी जेविकता के साथ संप्रेषित करने की क्षमता, सामाजिक यथार्थ का अविकृत दर्पण होता हैं समकालीन हिन्दी उपन्याासकारों ने साहित्य को जीवन के परिपार्श्व और सामाजिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में रखकर परखने का प्रयत्न किया हैं उपन्यासकारों ने सच्चाई के समायोजन के साथ मानवीय क्षमता का उन्नयन किया है।

मुख्य शब्द : संघर्षों, मिथक और यथार्थ, असहाय नारी, काम वासना।

प्रस्तावना

21वीं सदी को महिलाओं की सदी के रूप में जाना जाता है। जब महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर में अपनी अंतः निहित क्षमता के बल पर आत्मविश्वास और साहस के साथ पुरुष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व का अहसास दिलाने का सफल प्रयास कर रही है। विश्व के नारी समाज ने सदा से ही अपने को सामाजिक, धार्मिक, विधिक, शैक्षणिक, आर्थिक व सांस्कतिक आदि हर क्षेत्र के उपेक्षित समझा और उसकी यह पीड़ा सदा से ही संवेदित करती रही कि उसे पुरुष के अधीन ही परतंत्र, पराश्रमी, पराधीन जीवन क्यों जीना पड़ता है?

अध्ययन के उद्देश्य

1. मिथक व यथार्थ को परिभाषित करना।
2. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'रेखा' में मिथक व यथार्थ का चित्रण।
3. नारी के प्रति दृष्टिकोण।
4. समाज में नारी व पुरुष के प्रति समानता व असमानता।
5. असहाय नारी व प्रेम विवाह से जुड़ी नारी की दारुण कथा।

साहित्यावलोकन

श्री भगवतीचरण वर्मा ने रेखा उपन्यास में शरीर की भूख से पीड़ित एक आधुनिक, लेकिन एक ऐसी असहाय नारी की करुण कहानी कही है जो अपने अंतर के संघर्षों में दुनिया के सब सहारे गँवा बैठी। रेखा ने श्रद्धातिरेक से अपनी उम्र से कहीं बड़े उस व्यक्ति से विवाह कर लिया जिसे वह अपनी आत्मा तो समर्पित कर सकी, लेकिन जिसके प्रति उसका शरीर निष्ठावान् नहीं रह सका।

शरीर के सतरंगी नागपाश और आत्मा के उत्तरदायी संयम के बीच हिलोरें खाती हुई रेखा एक दुर्घटना की तरह है, जिसके लिए एक ओर यदि उसका भावुक मन जिम्मेदार है, तो दूसरी ओर पुरुष की वह अक्षम्य 'कमजोरी' भी जिसे समाज 'स्वाभाविक' कहकर बचना चाहता है। वस्तुतः रेखा जैसी युवती के बहाने आधुनिक भारतीय नारी की यह दारुण कथा पाठकों के मन को गहराई तक झकझोर जाती है।

मिथक और यथार्थ

'मिथक' शब्द 'मिथ' से बना है और 'मिथ' यूनानी भाषा के 'माइथोस' से निःसृत हुआ शब्द है जिसका अर्थ है 'अतर्क्य आख्यान' – यानी ऐसा आख्यान जिसमें तर्क की संगति तलाशने का कोई औचित्य नहीं है।

मिथक वस्तुतः आदिम मनुष्य के सामूहिक अवचेतन मन द्वारा देखे गये बिम्ब हैं जो भाषा में प्रकट होते हैं। आदिम मनुष्य अपने आस–पास के समाज, प्रकृति, जीवन आदि के रहस्यों के प्रति विस्मयात्मक प्रतिक्रिया द्वारा उसका सहजस्फूर्त, पुनःसृजन करता था। मानव जाति के ये सामाजिक स्वप्न जो कि सामूहिक अनुभव की चेतना द्वारा सृजित होते हैं इनकी यथार्थता हमेशा तर्क–पूर्व चिंतन में अनुस्यूत होती है। केवल आस्था और पवित्रता से 'इनकी यथार्थता के परिभाषित किया जा सकता है। अस्तु, इनकी यथार्थता ऐतिहासिक नहीं होती।' मिथक सदैव अपनी आस्था के कारण यथार्थ और पुनीत बनता है। मानवीय सभ्यता के इतिहास में मिथकों की स्थिति सर्वत्र लगभग एक–सी होती है। इस बात को प्रमाण रूप में सृष्टिमूलक मिथकों में बखूबी खोजा जा सकता है। जहाँ प्रत्येक समाज की कल्पना में मानव उत्पत्ति का सिद्धान्त लगभग एक जैसा ही है। चाहे वह सुमेरियन सभ्यता की जलप्लावन की कथा हो या फिर शतपथ ब्राह्मण के जलप्लावन की कथा।

यथार्थ

लेकिन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हम देखें तो यही पायेंगे कि घटना–चक्र ने यथार्थ को समझने के बहुत से मानदण्डों को उलझा कर संदिग्ध कर दिया है, हो सकता है, कि इससे वर्तमान को समझने की हमारी पहचान सपाट, सतही और निरपेक्ष भी बन गई हो। शिवदानसिंह चौहान का विचार है कि – 'हम एक ऐसे संक्रान्ति–युग की पैदावार हैं जिसके यथार्थ की ह्रासोन्मुख और विकासोन्मुख प्रवृत्तियों का द्वन्द्व अपनी चरम अवस्था में पहुंच गया है। एक ओर संकट और ह्रास है तो दूसरी ओर अभिनव विकास है, एक ओर पुराने वर्ग–समाज का ढ़ाँचा चरमराकर टूट रहा है तो दूसरी ओर एक नये वर्ग – मुक्त मानव–समाज का निर्माण हो रहा है...' यह तय है कि जो सामाजिक रवैया हमारे सामने घटित होता है उसका सापेक्ष प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। जिससे कि हम यथार्थ की पड़ताल में लग जाते हैं जो हमारे सामने कला–संबंधी समस्याएं भी उभरकर आती हैं। शिवदानसिंह चौहान का मत है 'यथार्थ को चित्रित करने की कला – संबंधी समस्याओं से नहीं उलझना है, बल्कि जन – पक्ष की बिखरी हुई शक्तियों को एकजूट करने में भी सहायक होना है, ताकि हमारे राष्ट्र – संघर्ष में एक नया जनवादी उभार आए और देश में वह अनुकूल वातावरण पैदा हो सके, जिसमें लेखक को समूची जनता के रागतन्तु छूने में कठिनाई न हो, ताकि लेखक सहज ही इतिहास की उभरती हुई शक्तियों को देख सके और ऐसे पात्रों की सृष्टि कर सके जो युग की वास्तविकता के सच्चे प्रतिनिधि हों...।''

मिथक और यथार्थ का अंतर संबंध

आदिम समाज के अवशेषों या चिह्नों को ध्यान से देखने पर हमें आदिम मुनष्यों के अनुभवों की एक विशाल दुनिया नजर आती है। उसमें उस समाज की कल्पनाओं, उनके स्वप्नों के भीतर ही हमें उनके यथार्थ भी मिलते हैं। किन्तु आधुनिक सभ्य मनुष्यों की दृष्टि में वे सर्वथा ओझल बने रहते है। वहां केवल एक काल्पनिक संसार की रहस्यात्मकता ही हाथ लगती है। उसका कारण है कि आधुनिक मनुष्य उन रहस्यों को विवेकवान होने की स्थिति से देखता है अर्थात् उनमें वह स्पष्ट विचार खोजता है। विचार से अर्थ विश्लेषणात्मक बुद्धि से है जिसका वहां अत्यंत कम आभास मिलता है। वस्तुतः उन काल्पनिक अनुभवों में विचारों का आभास उनके काल्पनिक बिम्बों के साथ इस प्रकार गुंथा हुआ मिलता है जिसे अलग करना अत्यन्त कठिन होता है। इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि आदिम मनुष्यों के काल्पनिक बिम्ब निरा उद्देश्यहीन मात्र कल्पनाएं हैं या कि यथार्थ जगत् से अछूता कोई स्वप्नलोक यदि हम मिथकों की भाषा के मूल सकेतों को देखने, समझने की कोशिश करें तो एक एक ऐसे व्यापक बिखेर हुए यथार्थ संसार की झांकी मिलेगी। इसका कारण यह है कि आधुनिक मानव की तरह प्राचीन मानव के पास विवेकशक्ति नहीं थी जिसके कारण वह इस संसार की अन्य वस्तुओं को अपनी सत्ता से अलग करके सोच सके। वहां प्रकृति और मनुष्य को दो भिन्न–भिन्न सत्ताओं के रूप में महसूस कर सकने की विवेकशक्ति का अभाव था। आदिम मानव इस विश्व को अपनी ही तरह की शक्ति समझते हुए उससे सीधा संवाद करता था। प्रकृति से उसके सीधे संघर्षों से उत्पन्न भावनाओं के संकेत ही मिथक हैं।

नारी से जुड़ा मिथक और यथार्थ

यह आधुनिक भारतीय नारी की दारुण कथा है। जो व्यक्ति के गुह्यतम मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण के लिए सिद्धहस्त प्रख्यात लेखक श्री भगवतीचरण वर्मा ने इस उपन्यास में शरीर की भूख से पीड़ित एक आधुनिक लेकिन एक ऐसी असहाय नारी की करूण कहानी कही है जो अपने अन्दर के संघर्षों में दुनिया के सब सहारे गँवा बैठी।

रेखा का सौन्दर्य

प्रभाशंकर के सामने इक्कीस–बाईस साल की एक युवती थी, ताजे और प्रस्फुटित यौवन से भरपूर। यह भोलापन उसकी आंखों में ही नहीं था, यह भोलापन उसके समस्त अस्तित्व में था। रेखा का शरीर, जिसमें जीवन की ऊष्मा थी, जिसमें गति का लचाव था। यह रेखा ममता की साकार प्रतिमा बनकर उसके जीवन में प्रवेश कर रही थी। रेखा की इन पुतलियों में कौन–सा आकर्षण है जो लोग उसके सामने खिलौने बन जाया करते है? रेखा इतना अनुभव कर सकती है। पर वह यह अनुभव नही कर पाती कि उस बहुत कुछ के हाथ में रेखा स्वयं एक खिलौना है। रेखा सुन्दर है, रेखा को इसका पता था। रेखा ने खड़े होकर अपने शरीर को दर्पण में देखा और जैसे वह स्वयं अपनी सुन्दरता पर मुग्ध हो गई। इसी सौन्दर्य को बिखेरने के लिए तो उसने अपना शृंगार किया था।

शिक्षित नारी

रेखा एम.ए. प्रथम पास करके रेखा एम.ए. फाइनल में आई थी, उसका विषय था दर्शन शास्त्र एम.ए. प्रीवियस की मार्कसीट जब उसे मिली थी, वह प्रसन्नता से खिल उठी थी। उसे सत्तर प्रतिशत अंक मिले थे, और सबसे बड़ा आश्चर्य तो इस बात पर हुआ था कि प्रोफेसर शंकर के परीक्षा में उसे बयासी प्रतिशत अंक मिले थे।

असहायनारी

'रेखा' में भगवतीचरण वर्मा ने शरीर की भूख से पीड़ित एक असहाय नारी की कथा कही है रेखा ने श्रद्धातिरेक से प्रभाशंकर से विवाह कर लिया, किन्तु उनके प्रति उसका शरीर निष्ठावान न रह सका। रेखा ने अपनी आत्मा का अंत प्रभाशंकर को समर्पित कर दिया। एक भयानक द्वन्द्व मचा हुआ था उसके भावना और बुद्धि का असहाय संघर्ष चल रहा था, जिसके रेखा डूबती चली जा रही थी। कभी भावना बुद्धि पर विजय पाती और कभी बुद्धि भावना पर।

प्रेम विवाह

प्रभाशंकर और रेखा के विवाह की पृष्ठभूमि तैयार की गई है प्रेमियों के बदलते क्रम और अन्त में हार्ट अटैक के मृत्यु जैसी घटनाओं को मनोवैज्ञानिक उहापोह के कारण तर्क संगत योजना मिल गई है। कार्यकरण की श्रद्धासंबद्ध कड़ी होने के कारण यह उपन्यास वस्तु–अन्विति का सुन्दर उदाहरण है, क्योंकि एक भी घटना रेखा के जीवन से अन्यत्र घटित नहीं हुई है।

चरित्र–विधान

रेखा इस उपन्यास की नायिका है इसलिए इस उपन्यास को नायिका–प्रधान उपन्यास माना गया है। मनोवैज्ञानिक शिल्प के आधार पर, चरित्र, चित्रण की दिशा में, रेखा एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। सभी पात्रों के बीच लेखक रेखा, प्रभाशंकर और योगेन्द्रनाथ के चरित्र को उभार सका है। इस उपन्यास के चरित्र–चित्रण और विशेषतः रेखा के चरित्र पर आक्षेप लगाया जा सकता है।

काम वासना से असन्तुष्ट नारी

इस उपन्यास की नायिका रेखा असन्तुष्ट काम–वासना के कारण नारी जीवन के घिनौने चित्र प्रस्तुत करती हैं अश्लीलता और अनैतिकता का आरोप लगाया जा सकता है किन्तु सामाजिक अन्तद्वन्द्व के कारण रेखा लेखक की एक सुन्दर रचना है। रेखा के जीवन पर लेखक ने अपना जीवन दर्शन थोपने का प्रयास नहीं किया है और विकास की रेखाओं को पार करती हुई उसके जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं कभी काम भावना, बुद्धि पर विजय पाती चली जा रही है।

दाम्पत्य जीवनः

प्रभाशंकर की पहली पत्नी का देहान्त हो गया था। दूसरा विवाह रेखा के साथ किया। प्रभाशंकर व रेखा की आयु में बहुत ज्यादा अन्तर था। प्रभाशंकर की आयु पचास वर्ष की थी। रेखा की आयु इक्कीस–बाईस साल की थी। विवाह के कुछ साल तक तो उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय था। लेकिन यथार्थ तो यह था कि रेखा की शारीरिक जरूरते प्रो0 प्रभाशंकर पूरा न कर सका जिसके कारण रेखा उपन्यास नारी पात्र रेखा से जुड़ा मिथक और यथार्थ है।

निष्कर्ष

भगवती चरण वर्मा का उपन्यास 'रेखा' में नारी से जुड़ा मिथक व यथार्थ का अध्ययन किया है। रेखा अपने पति प्रोफेसर प्रभाशंकर से आत्मिक रूप से प्रेम तो करती है पर प्रभाशंकर से उसे शारीरिक तृप्ति प्राप्त नहीं होती है। इस कारण वह अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए क्रमशः पर पुरुष के साथ सम्बन्ध स्थापित करती है। यहाँ वर्मा जी का नारी संबंधी दृटिष्कोण प्रगतिशील और बदलते हुए युग की मान्यताओं के साथ सहमति प्रकट करते प्रतीत होता है। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास रेखा में भगवतीचरण वर्मा ने पूर्ण रूप से मिथक को न अपनाकर यथार्थ का भी चित्रण करता है। यथार्थ के बिना व्यक्ति मिथक का निर्माण नहीं करता। समाज में कहीं ना कहीं हमें यथार्थ के रूप में कोई न कोई घटना अवश्य मिल जाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *शिवदानसिंह – 'यथार्थ और साहित्य'।*
2. *रेखा : उपन्यास।*
3. *भगवती चरण वर्मा, सीधी सच्ची बातें।*
4. *राम शरण शर्मा –मिथक और यथार्थ ।*
5. *यथार्थ : ड़ा0 डी0 के0 गर्ग।*
6. *हिन्दी व्याकरण साहित्य।*